चित्रकार प्रो॰ रामचन्द्र शुक्ल की कलात्मक प्रतिभा

डॉ0 राकेश कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, ललित कला विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा
ईमेलः rksinghkuk@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 राकेश कुमार सिंह

''चित्रकार प्रो॰ रामचन्द्र शुक्ल की कलात्मक प्रतिभा ''

Artistic Narration 2020,
Vol. XI, No. II,
Article No. 16 pp. 95-99

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xi-no-2-july-dec-2020/

सारांश

प्रस्तावना

एक साधारण वर्ग के गृहस्थ के मकान के कक्ष में टिमटिमाते हुए एक दीये को देखकर भावुकता से किसी ने प्रश्न किया, दीपक! इस प्रकार इस गति से कब तक टिमटिमाते रहोगे? दीपक की रोशनी एक बार प्रज्वलित हुई और बोली, 'जिज्ञासु देखा तुमने मेरे अन्दर क्या छिपा हुआ है? यह रोशनी का एक बिन्दु अपने में उतना ही प्रकाश रखता है जितना सूर्य की किरणों में है, परन्तु समय की बात है प्रकाश की कमी नहीं है। प्रकाश का प्रज्वलित होने के लिए और भी उपकरणों की आवश्यकता होती है। प्रकाश होने पर भी अन्य विरोधी शक्तियों के कारण प्रकाश धूमिल जान पड़ता है। समय की बात है, समय आने पर अपने आप प्रकाश बल पा जाता है। मैं उसी समय की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।'

उक्त कथन के प्रकाश में देखें तो कह सकते हैं कि प्रो॰ रामचन्द्र शुक्ल का रूझान बचपन से ही कला के प्रति था । बचपन में जब ये स्कूल जाते थे तो अधिकतर समय खेलने में बिताते थे । एक बार सभी बच्चे कक्षा में पढ़ रहे थे और शुक्ल जी अपनी कक्षा के एक दो साथियों के साथ बाहर खेल रहे थे । इतना भी याद नहीं रहा कि सभी बच्चे कक्षा में चले गये हैं । कक्षा के बाहर स्कूल की दीवार पर अपने साथियों के साथ खड़िया मिट्टी से तमाम लकीरें खींच रहे थे। अचानक किसी ने आकर दो चाँटे लगाये। बाद में इनको ध्यान आया कि वे कला अध्यापक हैं। कक्षा में आने के पश्चात् कला अध्यापक भी ब्लैकबोर्ड पर कुछ खींचने लगे । इनको बड़ा गुस्सा आया कि जिस काम के लिए अध्यापक मुझे मना कर रहे थे वे खुद कर रहे थे। श्री शुक्ल मानते हैं कि अगर यह घटना न घटी होती तो वे शायद चित्रकार न बनते । उस दिन से श्री शुक्ल में कला के प्रति एक नया उत्साह जगा और निरन्तर कला का अभ्यास करने लगे । पत्र–पत्रिकाओं में छपे चित्रों की नकल करते और अपनी इच्छा अनुसार उसमें रंग भरते व अभ्यास करते । इन्होंने अपनी कक्षा के कमरों की दीवारों को चित्रों से भर दिया । कुछ दिनों बाद जब ये काफी बड़े हो गये तो इनको ऐसा आभास हुआ कि इनके चित्र उतने अच्छे नहीं हैं जितने कि पत्र–पत्रिकाओं में छपते हैं । इनको अपने चित्रों की रेखायें व रंग उतने साफ और सुडौल नहीं लगते थे । बड़ी कोशिश करने पर भी अच्छे चित्र नहीं बन पाते थे । प्रो॰ शुक्ल को ऐसा लगने लगा कि बिना किसी की सहायता के और बिना चित्रकला के नियमों को जाने मैं अच्छे चित्र नहीं बना सकता । तब तक शुक्ल बी॰ए॰ में पहुँच गये थे। इनको यह जानकर बहुत आनन्द हुआ कि प्रयाग विश्वविद्यालय में पढ़ाई के साथ–साथ चित्रकला भी सिखाई जाती है और कलकत्ता के विख्यात चित्रकार श्री क्षितिन्द्र नाथ मजूमदार जी चित्रकला विभाग के अध्यक्ष हैं। इन्होंने तत्काल अपना नाम चित्रकला कक्षा के लिए भी लिखवा दिया। श्री शुक्ल ने मजूमदार जी के सानिध्य में 3–4 साल कला सीखी। मजूमदार जी का एक गुण खास यह था कि वे किसी भी छात्र को हतोत्साहित नहीं करते थे ।

चित्रकार रामचन्द्र शुक्ल स्वयं किसी एक निश्चित शैली के आधार पर चित्र नहीं बनाते थे । उनके चित्रों की शैली व तकनीक की विविधता देखकर यही कहना पड़ता है कि वे यथार्थ में एक प्रयोगवादी चित्रकार थे । उनका मत था कि कलाकार को कभी भी किसी एक शैली या तकनीक से बंधना नहीं चाहिए। जिस दिन कलाकार किसी एक शैली या तकनीक से बंध जाता है वह स्वाधीन नहीं रहता । उसकी रचना नीरस हो जाती है। कलाकार शैली या तकनीक का गुलाम नहीं होता। शैली व

तकनीक कलाकार समय के साथ बनाता चलता है। शैली और तकनीक से अधिक महत्त्व की वस्तु है कल्पना तथा क्रियात्मक प्रवृत्ति । इसके बल पर कलाकार अपनी कला को ऊँचे स्तर पर उठा सकता है। कला सुन्दर भविष्य तक पहुंचने की सीढ़ी तैयार करती है। जिसके आधार पर समाज अपने विकास की चरम सीमा तक पहुंचता है। यही कारण है कि चित्रकार शुक्ल के चित्र अति काल्पनिक तथा निर्माणवादी हो गये और उनकी प्रत्येक रचना में नव–निर्माण का दर्शन होता है। इनके चित्रों का विषय ही कल्पना तथा नवरूप हो गया है। यह चित्र देखने में बड़े अजीब लगते हैं और उनको समझना तो बहुत कठिन मालूम पड़ता है। यह ठीक भी है क्योंकि समझने के लिए उन चित्रों में कुछ होता भी नहीं। वे तो कलाकार की नई कल्पना की रचना मात्र होते हैं । उन्हें देखकर आनन्द लिया जा सकता है। कलाकार की कल्पना से हिल–मिल कर वही गीत गाया जा सकता है जो सदैव मनुष्य को नव जीवन का सन्देश देता रहता है। इन चित्रों में जान–बुझकर कोई विषय या भाव चित्रित नहीं रहता, हाँ अनजाने में कभी–कभी चित्रकार की मनोस्थिति का दर्शन इसमें अवश्य हो जाता है।

चित्रकार शुक्ल की कला का मुख्य विषय यही कल्पना और नवीनता है पर अन्य विषयों पर भी इनके काफी चित्र मिलते हैं और यह चित्र भारतीय प्राचीन चित्रकला शैलियों से बहुत कुछ प्रभावित लगते हैं जैसे 'बाली वध' अजन्ता शैली से, 'जैन राज कुमारी' तथा 'लक्ष्मी' जैन शैली से, 'हंसदूत' तथा 'प्रेम पुष्प' कांगड़ा शैली से, 'शायर गालिब' प्रभाववादी शैली से । शुक्ल जी के इन चित्रों को देखकर यह बात स्पष्ट रूप से ज्ञात होती है कि चित्रकार शुक्ल ने प्राचीन भारतीय कला शैलियों तथा आधुनिक प्रयोगवादी शैलियों का गहरा अध्ययन किया और वे जागृत तथा प्रबुद्ध ढंग से अपनी कला को सदैव अन्य प्रभावोत्पादक चित्रकला शैलियों के सम्बल से मांजते रहते हैं । इतना ही नहीं कला के ऊपर उनके सुन्दर मौलिक सूझ–बूझ के लेखों को देखकर यह बात और भी सिद्ध होती है कि वे कला को किसी एक दायरे में न देखकर अन्तर्राष्ट्रीय ढंग पर उसका विकास करना चाहते हैं।

कलाकार रामचन्द्र शुक्ल एक ऐसे कलाकार थे जिनके सत्य विचारों ने उनकी कला को शिव और सुन्दर का रूप दिया है। इनके चित्रों की रेखाओं में भारत की भाषा है। कलाकार शुक्ल की चित्र शैली में जो नवीनता है वह मौलिक और सांस्कृतिक है। श्री शुक्ल अपनी अनुभूतियों के आधार पर ही जीवन पर्यन्त नवीन प्रयोग करते रहे । पहले इन्होंने टैगोर शैली अपनाई किन्तु जब इन्हें यह अनुभव हुआ कि इसमें पाश्चात्य शैली का प्रभाव है तो अपनी एक नवीन दिशा अपनाई जिसमें अनुकरण नहीं, खोज और मौलिकता है। इनके चित्रों में चरित्र, व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति और वातावरण का संगत प्रभाव रहता है। वैसे तो कला का पथ विस्तृत और अगम अनादि है और इसमें पूर्णता प्राप्त करने का प्रयास केवल एक भ्रम मात्र है परन्तु ऊँचाई, गहराई और विलक्षणता प्राप्त करना कठिन नहीं है। उत्तर प्रदेश के इतिहास में प्राचीन काल से लेकर आज तक चित्रकला के क्षेत्र में कभी भी कोई कलाकार वर्ग या चित्रकार विख्यात हुआ है। ऐसा ज्ञात नहीं है। काशी और प्रयाग सांस्कृतिक क्षेत्र होते हुए भी इस क्षेत्र को ख्याति प्राप्त चित्रकार नहीं दे सके । ज्ञान व धर्म के क्षेत्र में प्रयाग व काशी प्राचीन काल से अपने गौरव को प्राप्त है। वैसे इन स्थानों में चित्रकला की अपनी परम्परा रही है। आज यहाँ अनेक कला–विद्यालय भी स्थापित हो चुके हैं और अनेक विलक्षण प्रतिभा वाले कलाकार सामने आ रहे हैं। यह कथन ठीक ही है कि 'शुक्ल

जी जैसे योग्य विद्वान तथा उत्साही कलाकार की बहुमुखी तथा विलक्षण प्रतिभा देखकर यह आशा की जा सकती है कि इस प्रान्त में कला के पथ पर एक नई चेतना तथा नव स्फूर्ति का जागरण होगा।" शुक्ल जी के चित्र यद्यपि भारतीय परम्परा के साथ चलते हैं फिर भी आधुनिक मनोवैज्ञानिक विचारों का इसमें बाहुल्य मिलता है। इस दृष्टि से इनके चित्र अनोखे होते हैं ।

वाचस्पति गैरोला के अनुसार, "शुक्ल जी ने अंकन विधान व चित्रित विषयों में कितने ही अनोखे व सफल प्रयोग किये हैं । उन्होंने भारतीय व पश्चिम की अनेक चित्रशैलियों का गहराई से अध्ययन किया तथा उन प्रवृत्तियों पर सतत् प्रयोग किये । प्रो॰ शुक्ल के चित्रों में प्रयोगवाद के कारण ही विविधता के दर्शन होते हैं, उन्होंने जहां एक तरफ लोक शैली व भारतीय लघु चित्रों की मूलभूत खुबियों को आत्मसात किया है वहीं अमूर्तन के गूढ़ रहस्य को भी समझा है। ठीक ही कहा गया है वास्तविक अर्थ में कलाकार वही है जो प्राचीन उपलब्धियों को नई वाणी दे अथवा उनसे प्रेरणा प्राप्त करके सृजन की गई दिशाओं को आलोकित करे ।" भारत में आपात्काल के समय प्रो॰ शुक्ल के जीवन में वह मोड़ आया जब अचानक उन्होंने अमूर्तवादी पद्धति में चित्र रचना छोड़कर समीक्षावादी चित्रों को अपनी कला का आधार बनाया। यहाँ तक पहुंचने के लिए उन्होंने अजन्ता, वाश शैली, लोक शैली, भारतीय लघु चित्र शैली का अध्ययन किया तथा उन्हें अपने तरह से अपने चित्रों में स्थान दिया । मौलिक शैली को विकसित करने से पहले कला के मूलाधार तत्वों से व निजी कलात्मक व्यक्तित्व से परिचित होने के लिए पूर्ववर्ती तथा विदेशी कला का अध्ययन, अनुकरण व अनुसरण करना लाभकारी है। इसे करने में आसानी होती है। र॰वि॰ साखलकर के अनुसार, 'अनुकरण व बाहय प्रभाव व्यक्तित्व मौलिकताओं को उभारने में सहायक होते हैं। कलाकार की गहनता है कि अध्ययन से निजी कलात्मक व्यक्तित्व का विकास होने पर वह स्वतन्त्र रूप से सर्जन करने में वह वहां तक सफल होता है।

इस प्रकार यदि प्रो॰ रामचन्द्र शुक्ल की कलात्मक प्रतिभा और उनके कला आन्दोलन के सन्दर्भ में कुछ कहना हो तो हम कह सकते हैं कि प्रो॰ शुक्ल उन विशेष चित्रकारों में थे जिनकी पकड़ लेखन व चित्रकारी में समान रूप से थी । काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के दृश्य कला संकाय में प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष पद पर रहते हुए कला शिक्षा को नई दिशा दी । कला क्षेत्र में समय–समय पर आ रहे परिवर्तनों के रूख को पहचानते हुए काशी में कला का एक उपजाऊ धरातल तैयार किया। भारतीय समकालीन कला के प्रमुखवाद 'समीक्षावाद' के प्रणेता रहे । इस वाद के मूल उद्देश्य भावना का प्रतिनिधित्व करने वाली प्रदर्शनियाँ आयोजित की और अनेक ग्रंथ लिखे, जिनमें समीक्षावाद, रेखावली, चित्रकला का रसास्वादन, नवीन भारतीय चित्रकला, आधुनिक प्रवृत्तियाँ, कला का दर्शन, कला प्रसंग आदि प्रमुख हैं। प्रो॰ शुक्ल अपनी कलात्मक प्रतिभा तथा कला क्षेत्र में प्रायोगिक और सैद्धांतिक पक्ष को सन्तुलित रखते हुए विशेष अवदान के कारण फ्रांस सरकार, आईफेक्स व अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित किये गये । प्रो॰ शुक्ल अपनी मौलिक चिन्तन और उत्कृष्ट रचनाओं के कारण अविस्मरणीय रहेंगे । अकादमी ने 28 मार्च 1996 को प्रो॰ रामचन्द्र शुक्ल को फेलोशिप प्रदान की और उत्तर प्रदेश साहित्य अकादमी ने कला भूषण की उपाधि से सम्मानित किया । उनका लेखन व चित्रण कार्य अन्तिम समय तक निरन्तर जारी रहा । उन्होंने कला के क्षेत्र में जितना कुछ किया उससे आने वाली

पीढ़ी उत्प्रेरित व लाभान्वित होती रहेगी ।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 हिन्दी प्रचारक, बनारस, मई 1954

2 वाचस्पति गैरोला, *भारतीय चित्रकला,* पृ0 **288**

3 र॰ वि॰ साखलकर, *आधुनिक चित्रकला का इतिहास*, पृ0 **30**

4 रामचन्द्र शुक्ल, *आधुनिक कला समीक्षावाद,* पृ0 **1**

5 राकेश कुमार सिंह, *प्रयोगवादी चित्रकार प्रो॰ रामचन्द्र शुक्ल*, पृ0 **18**

6 *कला त्रैमासिक,* अप्रैल से जून 2000, पृ0 **49**